अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

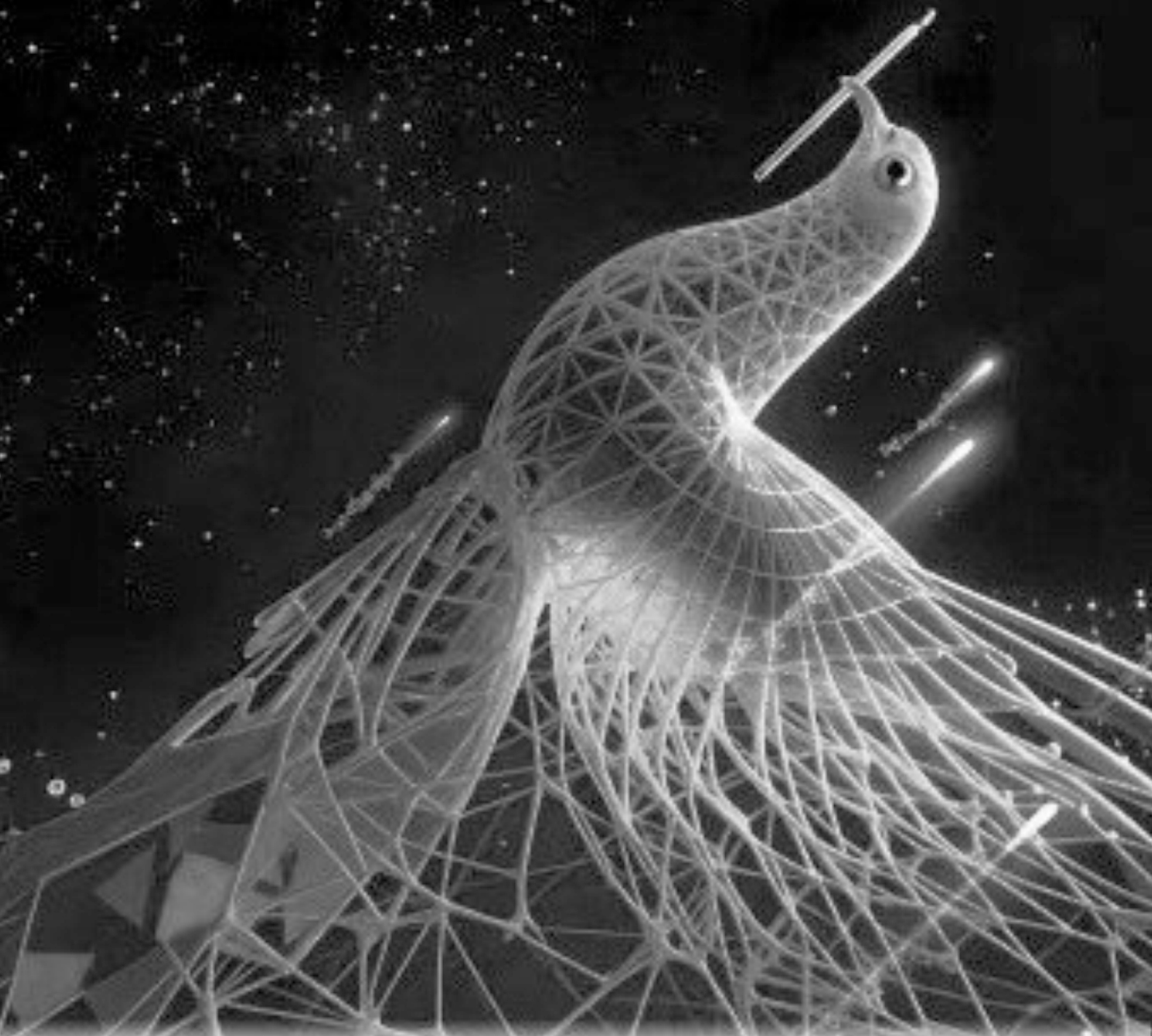

वर्ष : 52 अंक : 6 ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. 2082 जून, 2025 पृष्ठ-28 RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति

नव गठित कार्यकारिणी

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की साधारण सभा की बैठक में नयी कार्यकारिणी का सर्व सम्मति से गठन किया गया।

अध्यक्ष – श्री राजेन्द्र बोड़ा

संयुक्त सचिव – श्री गिरिराज मोहता

उपाध्यक्ष – श्रीमती सुशीला ओझा

संयुक्त सचिव – श्रीमती नीलम अग्रवाल

उपाध्यक्ष – श्री ओम प्रकाश टांक

सदस्य – श्री ध्रुव यादव

सचिव – श्री हिमांशु व्यास

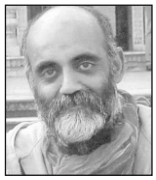

सदस्य – श्रीमती अंजू ढड्ढा मिश्र

कोषाध्यक्ष – श्री आदिल रजा मंसूरी

सदस्य – श्री ज्ञान प्रकाश सोनी

संस्था सदस्य –

1. संधान
2. सेवा मंदिर
3. उरमूल सीमान्त
4. दूसरा दशक
5. बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति

वाणी

धर्मं यौ बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्म तत् ।
अविरौधी तु यौ धर्मः स धर्मः सत्यविक्रम ।।
– महाभारत वन पर्व

जौ धर्म किसी दूसरे धर्म के मार्ग में बाधा डालता है, वह धर्म ही नहीं है। वह कुधर्म है। हे मनुष्य, जिसकी वीरता सत्य पर आधारित है, जौ धर्म किसी भी चीज से संघर्ष नहीं करता, वही सच्चा धर्म है।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 52 अंक :6 ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. 2082 जून, 2025 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. महाभरत वन पर्व
संपादकीय

5. मर्यादित भाषा और व्यवहार
लेख

7. भाषा की बेमेलता का शिक्षा पर असर **– अनिरुद्ध तगाट**

9. सामाजिक व आर्थिक विकास में शिक्षा की अहम भूमिका **– कृष्ण कुमार यादव**

11. बच्चों की परीक्षा परिणाम को अभिभावक कैसे लें ! **– डॉ. लता व्यास**

13. जीवन समाज के हिसाब से क्यों जिया जाय ! **– रति सक्सेना**

14. बुकर पुरस्कार : बानू मुश्ताक ने जीतकर रचा इतिहास **– शेरिलान मोलान**

पुस्तक चर्चा

16. भारतीय राज्य शास्त्र में शासक और प्रजा के सम्बन्ध **– राजेन्द्र बोड़ा**

18. **लेख**
साम्प्रदायिकता के धुंधलके में ओझल होती साझा विरास्तें **– डॉ.कन्हैयालाल खांडपकर**

21. बहुत धीमी है इंसानी दिमाग की डेटा प्रोसेसिंग **– विवेक कुमार**

23. जीवन में त्याग का महत्व **– रणजीत सिंह कूमट**
अध्ययन

26. दुनिया के सबसे बड़े प्रदूषक पर्यावरणीय क्षति से सबसे कम प्रभावित
स्मृति शेष

26. अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के जनसांख्यिकी विशेषज्ञ डॉ. कोठारी नहीं रहे

27. समाचार

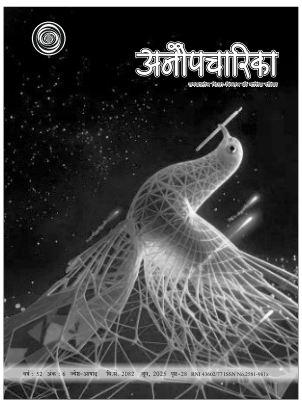

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com
www.raea.in

संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

संपादकीय

मर्यादित भाषा और व्यवहार

भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व की पहचान मानी जाती है। आधुनिक मानव का आचरण उसकी भाषा से ही परिभाषित होता है। एक समय था जब सामान्य जन की भाषा और कुलीन की भाषा में फर्क साफ-साफ देखा का सकता था। हमारे यहां तो इसे रेखांकित करने के लिए प्रतीकात्मक तौर पर यह भी कहा गया कि जब तक बोले नहीं तब तक कौवे और कोयल में फर्क नहीं किया जा सकता क्योंकि दोनों ही दिखने में एक से होते हैं

श्रेष्ठ भाषा के साथ श्रेष्ठ मानवीय आचरण और व्यवहार भी आते हैं जिससे उच्चतर सांस्कृतिक मूल्य स्थापित होते हैं। भाषा की कुलीनता समाज में रोल मॉडल बनती रही है। लोक की बोली परिष्कृत हो कर कुलीन की भाषा बनती रही है जिसमें साहित्य की रचना होती रही है। तुलसी की रामायण लोक बोली/भाषा में होकर भी श्रेष्ठ साहित्य में उच्चतर स्थान पा सकी है तो इसलिए कि उसका लेखक विनयशील है। उसके सभी पात्र मर्यादा से बंधे है, खलनायक रावण तक। यह भी संयोग नहीं है कि तुलसीदास रामायण की रचना करने से पहले 'विनय पत्रिका' लिखते हैं और कहते हैं कि उनके लेखन में कोई महानता नहीं है, जो है वह प्रभु राम की महानता है जिसकी आभा में उनका लिखा दमकता है।

भारतीय संस्कृति पर गर्व होता है तो इसलिए कि उसमें उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना है। ये सांस्कृतिक मूल्य हमारी लोक और साहित्यिक भाषा दोनों में परिलक्षित होते हैं। लोकतन्त्र में जब लोक सार्वभौम सत्ता का धारक बन जाता है तब निर्वाचन की प्रतिस्पर्धी राजनीति में इन मूल्यों का महत्व और बढ़ जाता है। राजनेताओं का मर्यादित आचरण और उनकी भाषा लोकतंत्र के अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक माना जाता रहा है। मगर इन दिनों जो दृश्य सामने आ रहे है उससे लगता है कि जैसे भाषा की मर्यादा को लांघने में सभी एक दूसरे से होड़ लगा रहे हों।

पिछली सदी के अंत तक देश में अगर किसी नेता की जुबान फिसलती भी थी, तो उसमें भी शालीनता बरकरार रहती थी। वे एक दूसरे का सम्मान रखना जानते थे। विरोधी के साथ तीखे वाक् युद्ध में भी एक गरिमा बनाये रखी जाती थी। इसी शालीनता और मर्यादा वाले आचरण से ही सदियों के सामंती पाश और गुलामी से बाहर निकल कर हम लोक के हाथों में संवैधानिक सार्वभौम सत्ता को स्थायित्व दे पाए। हम ने आपसी कषाय से ऊपर उठ कर लोकतांत्रिक संस्थाएं बनाई। निरक्षरता के विशाल रेगिस्तान के बावजूद हमारी संस्कृति ने हमें यह मर्यादा सिखाई कि लोकतंत्र में अपनी ज़ुबान पर कैसे नियंत्रण रखा जाय। मगर इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक तक पहुंचते लगता है सारा परिदृश्य बदल गया है। सोशल मीडिया के इस